वैश्विक तेल की कीमतें कैसे हुई कम और भारत पर इसका प्रभाव

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

22 नवम्बर, 2018

''पिछले छह हफ्तों में वैश्विक ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतों में 86.29 डॉलर से 63.3 डॉलर प्रति बैरल की गिरावट आई है, भारतीय पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कुछ सुधार हुआ है जबकि रुपया डॉलर के मुकाबले मजबूत हुआ है।''

3 अक्टूबर और 21 नवंबर के बीच, जबकि ब्रेंट कच्चे तेल की कीमत 36.31% घटकर 63.3 डॉलर प्रति बैरल हो गई, दिल्ली में पेट्रोल और डीजल की कीमतें क्रमश: 8.9% और 5.28% की गिरावट आई। पेट्रोल, जो 3 अक्टूबर को प्रति लीटर 83.85 रुपये प्रति लीटर पर था, 21 नवंबर को 76.30 रुपये हो गयाा। डीजल की कीमत 3 अक्टूबर को 75.25 रुपये से कम होकर 21 नवंबर को 71.27 रुपये हो गई थी।

इसी अवधि के दौरान, रुपया 2.64% के मुकाबले डॉलर के मुकाबले मजबूत हो गया। 21 नवंबर को एक डॉलर 71.30 रुपये के बराबर था।

कच्चे तेल के कम मूल्यों से लाभान्वित होने का दौर वर्ष 2017-18 के आरंभ से ही बदलने लगा और पेट्रोल-डीजल की कीमतें तेजी से बढने लगीं। कीमतों में और ज्यादा बढ़ोतरी होती इससे पहले ही सरकार ने अक्तूबर 2017 में इसमें दखल दिया और पेट्रोल-डीजल पर उत्पाद शुल्क को कम किया।

इसकी वजह से सालाना 26,000 करोड़ रुपए की राजस्व हानि हुई। स्थिति यह है कि नवंबर, 2014 से अब तक पेट्रोल व डीजल पर उत्पाद शुल्क 9 बार बढ़ा, पर उत्पाद शुल्क में मात्र 2 रुपए की कटौती केवल एक बार की गई।

वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतें और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की स्थिति के आधार पर ही सरकारी तेल विपणन कंपनियां पेट्रोल एवं डीजल की कीमतों में संशोधन करती हैं। आईओसी, भारत पेट्रोलियम कॉर्प लिमिटेड (बीपीसीएल) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्प लिमिटेड (एचपीसीएल) देश की तीन प्रमुख सरकारी तेल विपणन कंपनियां हैं।

सऊदी अरब और रूस ने मिलकर जून में ओपेक+समूह को उत्पादन कम करने का दबाव डाला। 2017 से ही ओपेक समूह कच्चे तेल का भारी उत्पादन कर रहा था। इसके बाद दोनों देशों ने कच्चे तेल का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर या रिकॉर्ड के निकट पहुंचा दिया। इसी समय अमेरिका में भी तेल का उत्पादन अप्रत्याशित तरीके से रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया।

अधिक उत्पादन के कारण जैसे ही तेल की कीमतें गिरनी शुरू हुई, तो सऊदी अरब ने घोषणा कर दी कि वह अगले महीने से तेल उत्पादन में रोजाना पांच लाख बैरल की कटौती करेगा। इस घोषणा का एक तरह से पुतिन ने समर्थन किया, तो ट्रंप ने नाराजगी जताई। दरअसल, मोहम्मद बिन सलमान को सऊदी अरब की महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिए कच्चे तेल से आमद की जरूरत है।

दूसरी तरफ रूस ने अपने कच्चे तेल के उत्पादन में कोई कटौती नहीं करने का संकेत दिया है। रूस का बजट तेल की आमद पर बेहद कम निर्भर है। पुतिन मोहम्मद बिन सलमान से रिश्ते सुधारने के भी इच्छुक हैं। ऐसे में वह सऊदी अरब की योजना का समर्थन करने से भला क्यों कतराएंगे। पुतिन ने कहा भी है कि कच्चे तेल की कीमत प्रति बैरल 70 डॉलर सही स्तर है।

देखा जाये तो विभिन्न कारकों की वजह से कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई है। इसमें शामिल है:

न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक सऊदी अरब और अन्य प्रमुख तेल उत्पादक, जो 2017 के बाद से तेल उत्पादन का उत्पादन कर रहे हैं, ने उपभोक्ता चिंताओं को कम करने और संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को शांत करने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल का उत्पादन शुरू किया।

साथ ही, संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्पादन अपेक्षा से अधिक बढ़ रहा है। निरंतर युद्ध के बावजूद और वेनेजुएला जैसे एक और परेशान देश के मुकाबले लीबिया में भी उत्पादन बढ़ गया है। विश्लेषकों का कहना है कि दुनिया भर में तेल भंडारण टैंकों में रखे तेल की मात्रा फिर से बढ़ रही है, जो एक नवीनीकृत तेल की बहुलता के खतरे के डर को बढ़ा रहा है।

ईरान पर ट्रम्प की प्रतिबंधों के बाद भी तेल उत्पादन पर कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा है। ऐसा इसलिए क्योंकि ट्रम्प ने ईरान के सबसे बड़े ग्राहकों - जापान, चीन और भारत को अस्थायी रूप से तेल खरीदने के लिए अनुमति दे दी है। एक ऊर्जा शोध फर्म वुड मैकेंजी के ईरान के विश्लेषक होमायण फलकक्षी ने कहा है कि बाजार इस बात को लेकर आश्चर्यचकित था कि छूट प्रदान की गई है।

संबंधित तथ्य

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तेल एवं गैस क्षेत्र की वैश्विक और भारतीय कंपनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों (सीईओ) के साथ उभरते ऊर्जा परिदृश्य पर विचार-विमर्श किया था।
- इस बैठक में ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों तथा कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी की वजह से वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा की गयी थी।
- आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि तीसरी सालाना बैठक में तेल एवं गैस खोज तथा उत्पादन क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने पर भी चर्चा होगी।

पृष्ठभूमि

- पिछले कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में निजी हिस्सेदारी लगभग स्थिर है, जबकि ईंधन की मांग सालाना पांच से छह फीसद की दर से बढ़ रही है।
- तेल की मांग में से 80 फीसद के लिए भारत आयात पर निर्भर है।
- गैस की जरूरत में से भी आधे से ज्यादा के लिए आयात पर निर्भरता है।
- 2015 में प्रधानमंत्री मोदी ने 2022 तक आयात पर निर्भरता को 10 फीसद घटाकर 67 फीसद करने का लक्ष्य रखा था। वित्त वर्ष 2014-15 में आयात पर निर्भरता 77 फीसद थी।
- तब से आयात पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है। इस स्थिति को देखते हुए सरकार घरेलू उत्पादन बढ़ाने पर जोर दे रही है।

रुपये में पेमेंट का सुझाव

- दुनिया के सबसे बड़े ऑयल प्रोड्यूसर OPEC को भारत ने सुझाव दिया है कि वह भारत को अनुमति दे कि वह तेल के दामों का पेमेंट यूरो और डॉलर की जगह रुपये में करे।
- ओपेक भारत की जरूरत का 60 फीसदी तेल सप्लाई करता है।
- ऐसे में यदि यह शर्त मंजूर हो जाती है तो रुपये से पेमेंट से भारत की स्थिति बेहतर हो सकती है।

क्या है ईरान मॉडल

- भारत का तीसरा सबसे बड़ा ऑयल सप्लायर देश ईरान है।
- अमेरिकी पाबंदी लगने के बाद भारत ने उसे रुपये में पेमेंट किया था।
- इसके पीछे का कारण था कि अमेरिका ने तेहरान को अनुमति दे रखी थी।
- ऐसे में इन रुपये से ईरान भारत से दवाइयां और भोजन खरीदता रहा।
- इस तरह से दोनों देश बिजनेस में डॉलर का प्रयोग नहीं करते रहे।
- ईरान का तेल ऐसे में भारत के लिए ज्यादा फायदेमंद रहा हैं क्योंकि वह 60 दिन के क्रेडिट पर सप्लाई करता रहा है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. ओपेक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ओपेक पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन है।
2. पिछले कुछ वर्षों से ओपेक समूह कच्चे तेल का वृहद उत्पादन कर रहे हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

2. हाल ही में तेल की कीमतों में आयी गिरावट के कारणों के संबंध में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

1. ओपेक समूह द्वारा तेल का वृहद उत्पादन
2. संयुक्त राज्य अमेरिका में भी तेल का अधिक उत्पादन
3. अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में ट्रेडवार
4. ईरान के तेल निर्यात पर प्रतिबंध

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर दीजिए।

(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 4
(c) 2, 3 और 4 (d) केवल 4

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में कच्चे तेल के मूल्य में कमी दर्ज की जा रही है। मूल्य में होने वाली कमी के कारणों की विवेचना कीजिए, साथ ही इसका भारत पर पड़ने वाले प्रभावों की भी चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

नोट :
21 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(a) होगा।